उड़ने वाली पैंटालून
जोसेफ़ शार्पीज़
चित्र: सू स्कुलार्ड

उड़ने वाली पैंटालून

जोसेफ़ शार्पीज़

चित्र: सू स्कुलार्ड

वो कपड़ों की धुलाई वाले दिन था - मैं टब में पड़ा था.
नहाने के बाद मैं एकदम साफ़-सुथरा और अच्छा लग रहा था.
मैं कपड़े सुखाने वाली डोरी पर लटका था और मेरे पैर धूप सेंक रहे थे.
फिर एक हवा के तेज़ झोंके ने मेरे क्लिप्स निकालकर फेंक दिए.
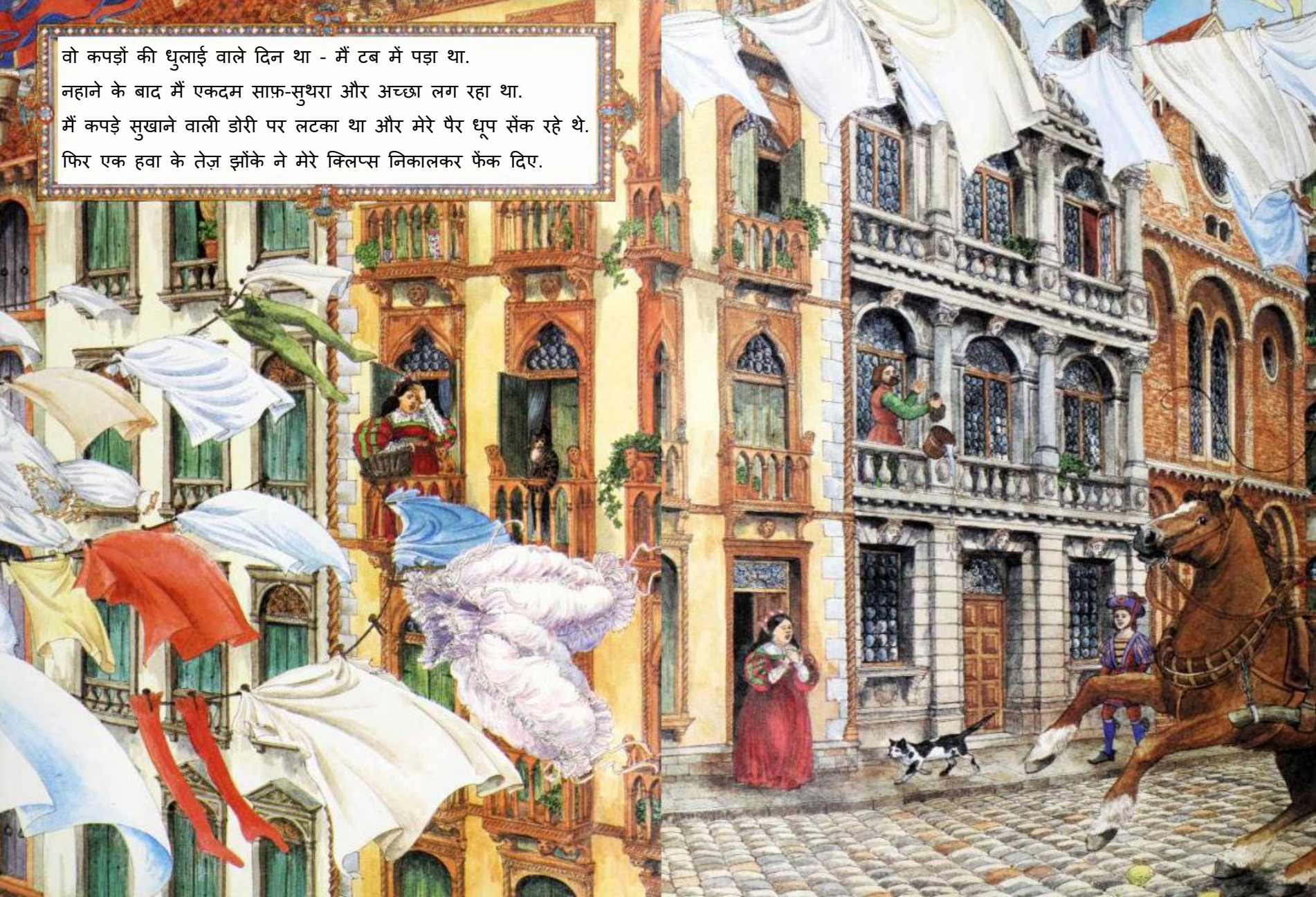
पहले मैंने एक हवा में चक्कर लगाया, फिर मैंने नीचे गोता मारा,

फिर लूप लगाते समय मैंने एक किसान को परेशानी में डाल दिया.
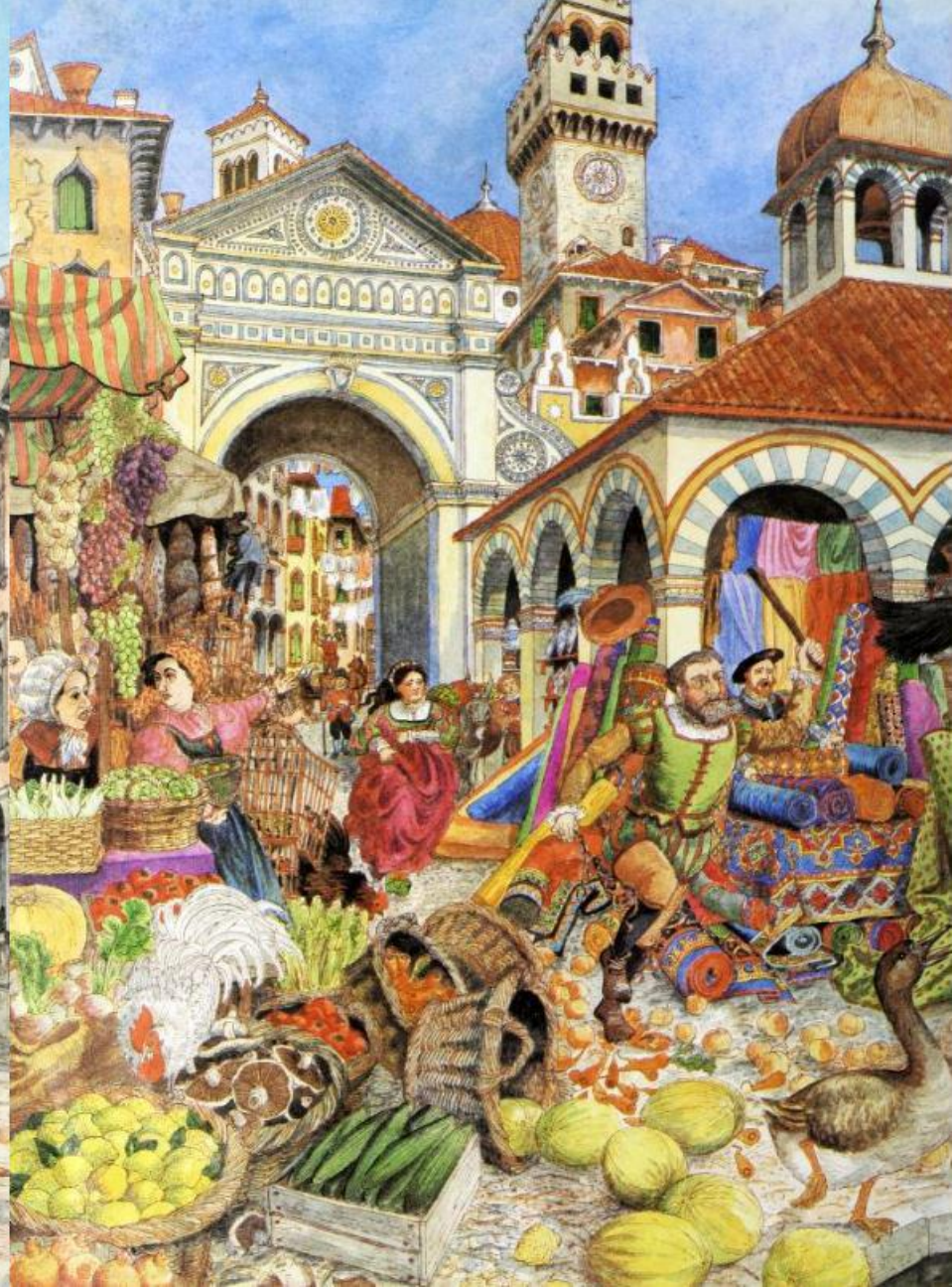
नदी के पास मैं सुरक्षित था! लेकिन सिर्फ एक मिनट के लिए -
अचानक एक ताकतवर बैल ने मुझे नदी में धकेल दिया.

मुझे लगा कि मैं डूब जाऊँगा, पर तभी किसी ने मुझे पकड़ लिया.
उसने मुझे रगड़ा और पीटा, फिर मुझे डुबोया और निचोड़ा.

अब मैं फिर से नदी के तट पर था, ठंडा और नम,

तभी मुझे एक शरारती जीव ने सूँघा और छीन लिया.

फिर हम वहां से दौड़े और अंत में समुद्र के पास पहुंचे.
मुझे लगा कि मैं वहां से कभी भी मुक्त नहीं हो पाऊंगा.

तब मैंने एक म्याऊ और पंजों की आवाज़ सुनी.

मेरे अपहरणकर्ता ने बड़े करीने से अपना जबड़ा खोला.

जैसे पक्षी पेड़ों के बीच उड़ते हैं वैसे मैं जहाज़ों के मस्तूलों के बीच उड़ा.

मैं हवा में ऊपर एक झंडे की तरह से उड़ा.

एक तूफान मुझे समुद्र से तट की ओर वापस लाया.

रास्ते में एक गेंद की मार से मुझे काफी मदद मिली.

महल के पास मैं इतना नीचे उड़ता हुआ आया

और मैंने दुश्मन से लड़ते एक शूरवीर को गिरा दिया.

फिर जब मुझे कुछ सुरक्षित महसूस हुआ
तब मैं एक उड़ते तीर में फंसा, जो मुझे उड़ा ले गया.

उस मीनार के ऊपर से कितना अद्‌भुत नज़ारा था -
नीचे छोटे-छोटे लोगों से भरा एक छोटा सा शहर था!
एक समुद्री-चील ने मुझे छीना - फिर हम कितनी तेजी से चढ़े!
विदेश की यात्रा के बारे में सोचकर मुझे कितना रोमांचित हुआ!
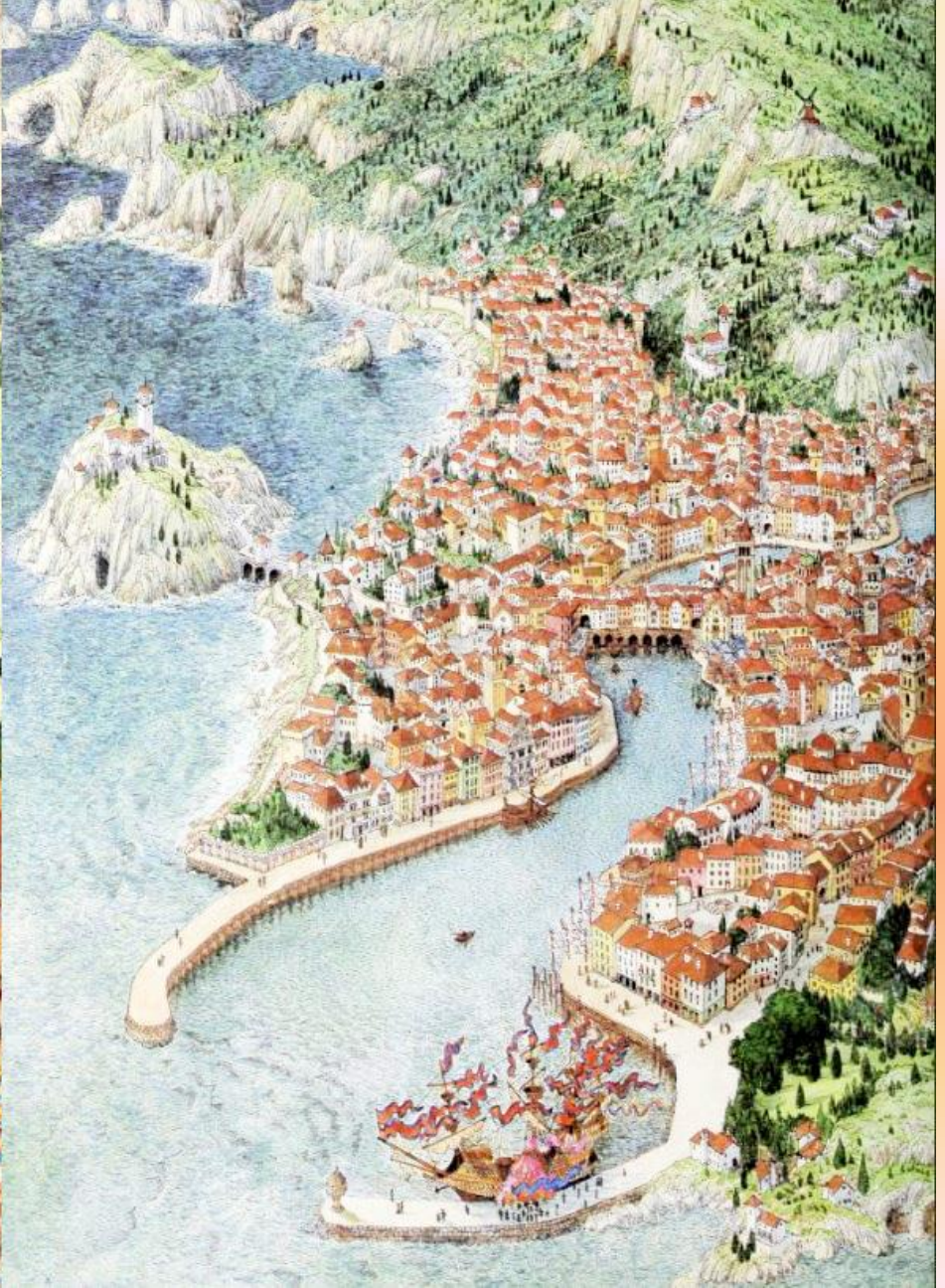
पंखों का फड़फड़ाना, फिर चीख़ और चिल्लाहट,
उस मुठभेड़ में मैं समुद्री-चील की चोंच से फिसल गया.
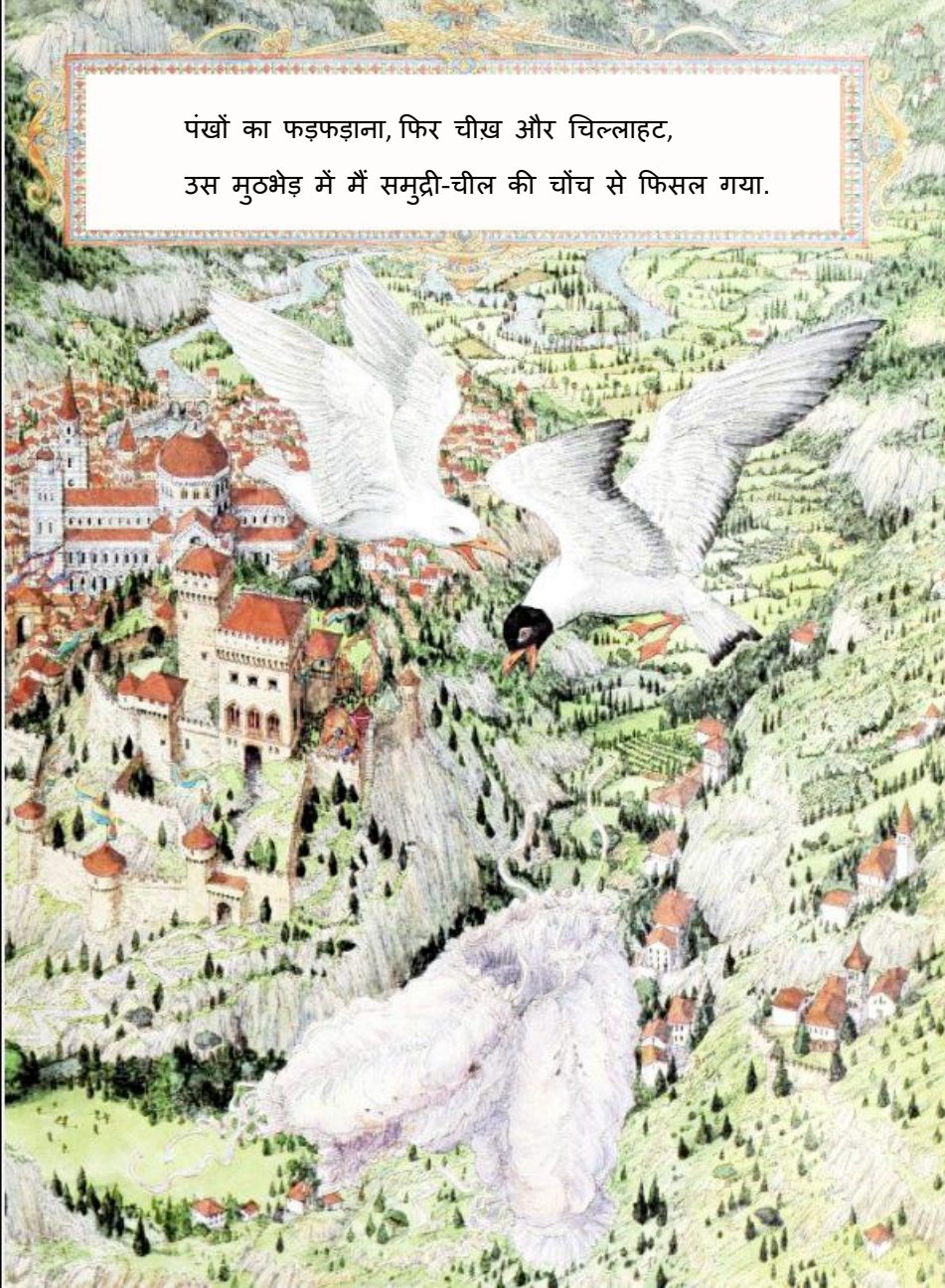
हवा मुझे किनारे पर वापस उड़ा कर लाई.
अब मेरे नीचे वो छतें थीं जिन्हें मैं पहले से जानता था.
फिर अचानक हवा थम गई, और मैं नीचे गिरा.
मैं चक्कर खाते हुए नीचे और नीचे गिरता गया.
अंत में मैं कपड़ों की डोरी पर जाकर अधमरा पड़ा.
थका-मांदा पर मैं घर वापस आकर खुश हुआ.
समाप्त